REVIEW OF RESEARCH

मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में दलित–अस्मिता

डॉ. कोमल सिंह शार्वा[1] , डॉ. सुधीर शर्मा2 , उत्तम कुमार बंजारे[3]

[1]शोध निर्देशक, भानु प्रताप देव , शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर जिला उत्तर बस्तर कांकेर (छ.ग.)
[2]सह–निर्देशक , कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय , भिलाई नगर , (छ.ग.)
[3]शोधार्थी , कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय , भिलाई नगर, (छ.ग.)

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

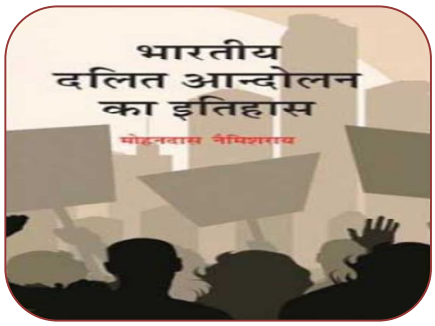

भूमिका –

वर्तमान युग दलित चेतना की कहानियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। आठवें दशक में यह उपस्थिति और अधिक तीव्रता से उभरी, लेकिन हिन्दी सम्पादकों और समीक्षकों के उपेक्षापूर्ण रवैए के कारण दलित रचनाएँ लगातार चर्चा से बाहर रहीं। दलित रचनाकारों के संघर्ष ने आखिर इस तिलस्म को तोड़ने में सफलता पाई। दलित कथाकार मोहनदास नैमिशराय की कहानियाँ जहाँ दलित पत्रिकाओं में छप रही थी वहीं **'गरिमा भारती','कुरुक्षेत्र','संचेतना','स्वतंत्र भारत'** में भी छपी। इस प्रकार यह एक विशाल पाठक वर्ग तक पहुँचने में सफल रहीं। [1]

मोहनदास नैमिशराय का **प्रथम कहानी** संग्रह 'आवाजें' में 13 कहानियाँ संग्रहीत है। ये कहानियाँ – आवाजें, घायल शहर की एक बस्ती, अपना गांव, हारे हुए लोग, नया पड़ोसी, अधिकार चेतना, गंजा पेड़, बरसात, रीत, उसके जख्म, मै, शहर और वे, भीड़ में वह, महाशुद्र।

दूसरा कहानी–संग्रह 'हमारा जवाब' में 19 कहानियाँ है– कर्ज, जगीरा, गांव, हमारा जवाब, परम्परा, तुलसा, आधा सेर घी, सुनो बरखुरदार, सपने सिकन्दर, सफर, खबर सिमता हुआ आदमी मजूरी, मुक्ति का संघर्ष, दर्द, एक गुमनाम मौत, गवर्नर के कोट का बटन, एक अखबार की मौत।

तीसरे कहानी संग्रह 'दलित कहानियाँ' में 16 कहानियां दी गई है – सिलसिला, आदमी की तलाश, इज्जत, चमत्कार, प्यास, पूरा आदमी, एक भला मानस, (मां, गुड और साहूकार) यात्रा, टोकरी की नौकरी, खरपतवार, धर्म परिवर्तन, आप यहां क्यों आते है, फेस बुकिया सुबनबा, बात सिर्फ इतनी सी।

इस तरह 48 कहानियां अब तक प्रकाशित हो गई है। इसमें से अधिकांश कहानियां पत्र–पत्रिकाओं में पहले से ही छप चुकी थी कुछ अभी हाल फिलहाल में छपी है।

मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में निम्न लिखित दलित अस्मिता है –

दलितों पर हुए अत्याचारों की दर्दनाकअभिव्यक्तिहै –

'अपना गांव' कहानी दलितों पर किए गए असीम अत्याचार की प्रस्तुत करती है। दलित महिला कबुतरी को ठाकुर के मंझले बेटे ने सारे गांव में इसलिए नंगा करके घुमाया कि उसका पति संपत ठाकुर से पांच सौ रूपय कर्जा लेकर गया जिसे कबुतरी चुका नहीं सकी। लेकिन गांव में ऐसी घटना का विरोध करने की हिम्मत किसी ने नहीं की। तभी दलितों पर अत्याचार करने का अधिकार गांव के सवर्ण समाज को परंपरागत रूप में ही मिला है।

संपत के पत्नी को नंगा कर गांव में जुलूस निकालने वाले (ठाकुरों) के खिलाफ पुलिस में शिकायत करने की लिए गए दलित युवक संपत और उसके साथियों का पुलिस की ओर से न्याय की अपेक्षा लाते, घसे और डंडे से मार–पीट मिली। न्याय की मांग करने हेतु गए दलितों को पुलिस थाने में ही बंद किया गया। 'अत्याचारी' दलितों को दंडित करने वाले

पुलिस इस्पैक्टर का यह कथन कि –

'' 'साला चमारों, अब तुम्हें जबान लड़ाना भी आ गया। एक-एक की गांड में मैने डंडा न चढ़ाया तो मेरा नाम एस.पी.त्यागी नहीं''[2]

इस कहानी में न केवल सामाजिक बल्कि प्रशासनिक व्यवस्था के पतन पर भी प्रकाश डालने के लिए पर्याप्त है।

इसी कहानी में एक ठाकुर ने उसी दलित से कर्ज लेकर भैंस खरीदी, जिसने जहर की गोली देकर भैस को मरवा डाला। अब उसी ठाकुर के खेत में उस दलित को पिछले पांच सालों से काम पर जाना पड़ता है और उसकी घरवाली को ठाकुर की हवेली पर काम करना पड़ता है। पहले 'ना' करने वाली यह दलित नारी ठाकुर की आधी घरवाली बनाई जाती है।

❖ अस्मिता का अविष्कार और ना कहने कासाहस –

'अपना गांव' के जरिए मोहनदास नैमिशराय ने ठाकुरों के अंतहीन अत्याचारों से तंग आकर अस्मिता का अविष्कार दर्शाया है। सदियों से अत्याचारित चमारों के सामने हरिया को लेखक ने अस्मितापूर्ण रूप में प्रस्तुत किया है। हरिया चमार का यह कथन कि –

'' तो हम नया गांव बसाएगें। नया गांव और अपना गांव.... ''[3]

दलितोंमें गुलामी के झकझोरने की मनोवृत्ति और उसमें बढ़ती हुई अस्मिता का परिचय देता है।

'कर्ज' मोहनदास नैमिशराय की पहली कहानी 'कर्ज' ग्रामीण जीवन में गरीबों दलितों को सताने वाली खूदखोरी की महाजनी व्यवस्था पर जमकर कठोरता से प्रहार करती है। विसंगतियों को मार्मिक ढंग से उजागर करने वाली यह कहानी के इतिहास में **मील का पत्थर** है।

'अपना गांव' में इलाहाबाद जिले में दौसा गांव में दलित महिला को नंगा कर घुमाने, 'अधिकार' चेतना में मेरठ में बाबा साहब की मूर्ति को हटाने,'रीत' में जमीदारों द्वारा दलितों की नव विवाहित बहुओं के साथ अनाचार का विरोध है।

'हारे हुए लोग' में दलितों को किराये पर मकान न मिलने की समस्या है।

'नया पड़ोसी' में दलित, गैर दलित पड़ोसी में जातिवाद का स्वरूप है।

'महाशुद्र' में ब्राम्हणों में भी घोर छुआछुत का मर्म स्पर्शी चित्रण है।

'सिलसिला' इस कहानी में आधुनिक कार्यालयों की गतिविधियों को दर्शाते हुए नारी अस्मिता को व्यक्त करता है। जिसमें रमा व रमेश के विषय में पुरे ऑफिस के कर्मचारी शादी-व्याह कि बाते करते रहते है क्योकि दोनो अविवाहित थे और गरीब भी। हंसी मजाक का सिलसिला वास्तिविकता में परिवर्तन हो जाता है।

नैमिशराय न अपनी कहानियों में निजि अनुभवों के आधार पर दलित समाज की नई और पुरानी पीढ़ियों में हो रहे बदलाव का चित्रण किया है।

'चमत्कार'गरीब दलित वर्ग कम उम्र की लड़कियों को कन्याभोज किया जाना, उपहार देना उसकी पुजा करना उसकीससम्मान नये-नये कपड़े और पैसा देना चमत्कार ही है। जुठन पर पलने वाले पीढ़ी आज चांद-सितारों में खोई हुई थी। क्योकि आज कंजके बैठाने का दिन है। (नवरात्री कन्या पुजा थी)

❖ दलित को जाति का सामना पग-पग पर करनापड़ता है-

मोहनदास नैमिशराय ने अपनी कहानियों में जाति व्यवस्था के शिकार दलित समाज को चित्रिण किया है। दलित को जाति प्रथा का सामना पग-पग पर करना पड़ता हैं। जगीरा, अपना गांव, रीत, हारे हुए लोग, उसके जख्म आदि कहानियों में भी जातिय दंश का घृणित रूपदलितों के सामने आता है। उन्हे अपमानित होना पड़ता है। परिणामस्वरूप उनके भीतर से आक्रोश उभरता है।

'दर्द' कहानी में एक छोटे दलित परिवार के बारे में मार्मिक चित्रण किया है। इस कहानी पर इलाहाबाद दूरदर्शन ने फिल्म भी बनाई है। परिवार का मुखिया हर भजन चपरासी है। दस वर्ष काम करने के बाद भी उसका प्रमोशन नहीं किया गया। वह भाग दौड़ करता है परन्तु निराशा हाथ लगती है वह बड़े बाबू से पदोन्नति पत्र के बारे में पूछता है तो आर.के.शर्मा ने गुस्से में उसके सारे बजूद को हिलाकर रख दिया था। उसे पहली बार पता चला था। जात के सवाल कितने निर्मम होता है और उनके जवाब भी।

'प्यास'विदेशी महिला मीरा भारत में महिला दलितो पर रिचर्स करने आयी थी रामनाथ पांडे ने मीरा से दलित युवक इंगले से मिलवाता है। इंगले एम.ए. किया है और बेरोजगार है। इंगले डॉ. आम्बेडकर वादी विचारधारा से है तभी मीरा की नजर पर लगे एक चित्र पर पड़ी तो वह अंगुली से संकेत कर पूछ बैठी, ''हू इज ही?'' इंगले ने गर्व के साथ कहा ''आवर से वियर बाबा साहब डॉ. आम्बेडकर।''[13]

''ओह, बाबा..... साहब..... डॉक्टर आम्बेडकर.....''
कहकरवह पलभर ठहरी थी फिर कहा था,
''मै तो सिर्फ गांधीजी के बारे में ही जानती थी''
गांधी का नाम सुनकर इंगले जैसे भड़क उठा,
''यू नो सवर्ण जाति के लोग आप सभी को पुरी जानकारी नहीं देते''
''बट व्हाई''
''इसलिए किवे बहुत कुछ छुपाते है, हमारा इतिहास, हमारी अस्मिता और हमारी पहचान।''
मीरा कहती है – ''मैने तो सुना है कि भारत में दलितो को आरक्षण मिलता है।''
उत्तर में इंगले कहते है – ''सिर्फ कागजों पर।''
बीच में बोल उठा था पांडे –''उनकी मीरा जी, मिलता है लेकिन....।''
मीरा के होठे से सहसा ही निकला था, ''व्हाट डू यू मीन लेकिन....।''

कहकरउसने उन दोनो की तरफ बारी-बारी से देखा था। कुछ पल के बाद धीरे से बोला था पांडे –''मीरा जी भारत में दलितों को आरक्षण मिलता है लेकिन....देयर इज द स्लो प्रोग्रेस आई मीन...।''[4]

पांडे और इंगले एक साथ एम.ए. किया था। पांडे को एक प्रोजेक्ट मिल गया। इंगले खाली रहा। पर उसके भीतर आंदोलन था। पांडे अमेरिका भी हो आया। वह अपने देश में ही रहा। और जमीन की गंध में रमा रहा। इस प्रकार दलित पेंथर इंगले प्यास में ही मर गया।

❖ आरक्षण के मुद्दें को उठाया है–

'मै शहर और वे'इस कहानी आरक्षण विरोध लहर का आम दलितों पर पड़े दुष्प्रभाव को दर्शाती है। एक गरीब दलित विधवा का बेटा मुशिकल से पढ़-लिख पाता है।उसे नौकरी के लिए परीक्षा देने 500मील दूर शहर जाना है जिसके लिए उसकी माँ महाजन से 10रूपये सौकड़ा के सूद पर लिए गए एक सौ रूपये किराया के लिए सारे पैसे परीक्षा स्थल तक जाते-जाते खत्म हो जाते हैं और वहां पहुंचकर उसे पता चलता है कि आरक्षण विरोध के चलते परीक्षा रद्द हो गई। वह हताश-सा सूनी सड़क की ओर चल देता है, जहां उसकी परेशानी समझने वाला कोई नहीं होता है।

जो लोग आरक्षण का विरोध करते है उन्हें यह भी पता नहीं कि एक दलित का बेटा कितनी कठिनाइयों से पढ़ पाता है। इस स्थिति को कहानी के माध्यम से नैमिशराय जी ने रेखांकित किया है।

❖ आक्रोश और प्रतिरोध से चेतना –

'अवाजें और रीत' कहानी में आक्रोश व प्रतिरोध को नैमिशराय ने चित्रण किया है।

'रीत' कहानी में गांव में जब भी कोई नई बहु आती है। तो उसकी सुहागरात पहले जर्मीदार मनाता था, जिसे रीत मान कर सब लोग निभाने को मजबूर थे। बुलाकी की नई नवेली दुल्हन के साथ भी यही हुआ जिसका विरोध करते-करते वह किसी तरह अपनी जान बचाकर गांव से भाग जाता है और वहां से इस परंपरा को जोड़ने के लिए अपने आपकों तैयार करता है। लोगों को लगता है कि वह मर गया है पर उसकी स्त्री को अपने पति के जीवित होने का पुरा विश्वास है। कई साल बाद एक दिन वह रात में घोड़े पर सवार कंधे पर बंदूक लेकर गांव में आता है और जर्मीदार की हवेली को आग लगाकर भस्म कर देता है इसमें जर्मीदार सहित उसका परिवार खत्म हो जाता है। वह स्वयं कह उठाता है – ''फूलो अब कोई जर्मीदार गांव की किसी औरत की इज्जत खराब नहीं करेगा। मैने उनका वंश सदा-सदा के लिए खत्म कर दिया है।'' [5]

वह अपनी पत्नी को लेकर रात में ही उस गांव से चला जाता है। यह कहानी दलित अत्याचारों के प्रतिरोध व आक्रोश का संकेत देती है।

❖ संप्रदायिकता का चित्रण –

'घायल शहर की एक बस्ती' में नैमिशराय जी लिखते है, ''मै जिस शहर मेरठ में पलकर बड़ा हुआ, वही शहर **साम्प्रदायिक दंगो** का आग में झलसता रहा। शहर में बस्ती-बस्ती आग बरस रही है, मार-काट मची है। लोग चीखते-चिल्लाते जान बचाकर भाग रहे हैं। वैंसा खौफनाक मंजर बचपन में देखा और जवानी में भी। मेरठ शहर का चप्पा-चप्पा हिन्दु-मुस्लिम दंगो का चश्मदीद गवाह रहा है।'' [6]

इस कहानी के माध्यम से सांप्रदायिकता के विद्रह चेहरे का चित्रण है जहां इसके प्रणेता अधिकांशतः हिन्दुओं के पुरोधा वर्ग से होते हैं। वहीं हत्या,जुल्म ज्यादती की पीड़ा और संताप झेलने वाले अधिकतर गरीब-गुर्बा लोग ही होते है। [7]

दहशत में शहर के रोये-रेशे में सिर्फ दहशत ही होता है कर्फ्यू होता है भूख होती है, उदासी होती है और घरों में खाली होते कनस्तर ठण्डे पड़ते चल्हे होते है।यह कहानी सांप्रदायिकता की प्रचलित अवधारणा को दर्शाती है।

❖ आर्थिक जीवन का चित्रण –

'गंजा पेड़', 'कर्ज', 'अपना गांव', 'इसके जख्म', 'आधा सेर घी', 'मजूरी' आदि कहानियाँ में बड़ी सफलता के साथ किया है।

'गंजा पेड़'इस कहानी में मोहनदास नैमिशराय जी ने दलितों की गरीबी का मार्मिक चित्रण किया है कि किस प्रकार दलित अपना पेट भर रहा है – ''कभी किसी की रोटी पर बीट आ पड़ती है तब वह गुस्साये मिजाज से रोटी को एक तरफ रख उन्हे मारने को दौड़ता। ऐसे में पक्षी उड़कर आकाश में गायब हो जाता। वह व्यक्ति रोटी से बीट साफ कर फिर खाने लगता।'' [8]

दलित समाज की स्थिति वैसी है कि रोज कुँआ खोदो तो पानी पियो। इस प्रकार आर्थिक जीवन का यथार्थ चित्रण इस कहानी में है।

❖ दलित नारी की दारूण दशा का यथार्थ चित्रण है –

वरिष्ट कथाकार नैमिशराय जी ने गंजा पेड़, बरसात, भीड़ में वह सिकन्दर, सफर तुलसा, एक गुमनाम मौत, आदि कहानियों में दलित नारी की दारूण दशा का यथार्थ चित्रण हुआ है। इन कहानियों के माध्यम से दलित महिला में एक नवीन चेतना का संचार हुआ जिसके फलस्वरूप अपने ऊपर हो रहे शोषण दमन का खुलकर विरोध कर रही है।

'उसके जख्म'इस कहानी में कमला एक दलित लड़की है जो अपने बाबा के साथ रहती है। एक दिन वह अपने बाबा को खाना देने खेत पर जाती है तो अकेला पाकर जमींदार उसकी इज्जत लूट लेता है। वह न्याय पाने के लिए जब शहर जाना चाहती है तो बाबा उसे शहर का डर दिखा कर रोकता है। कमला कहती है।– ''बाबा मेरी इज्जत एक बार लूट गई, दोबारा लूट जायेगी तो कौन-सी धरती फट जावेगी, कौन आसमान टूटकर गिर पड़ेगा? गरीब के साथ तो हमेशा से ऐसा ही होता रहा है।''[9]

'मंजूरी'इस कहानी में सुमति दलित परिवार से है। वह अपनी मजदूरी मांगने अपने मालिक के घर जाती है तो बार-बार उसे कल-परसो आने को कह कर टरका दिया है तो एक दिन सुमति दृढ़ निश्चय करके मजदूरी मांगनेजाती है, मालिक महेश उसे बाद में आने को कहता है लेकिन वह मजदूरी लेने की जिद कर अड़ी रहती है तो उसे कुत्ते से बुरी तरह कटवाया जाता है। महेश अब तक रोमी को इशारा कर चुका था। रोमी ने उसके हाथ को मुंह में ले लिया था। नुकीले दांत गड़ गये थे उसकी कलाई पर। जहांखून उभर आया था। रहे-सहे कपड़े भी फट गये थे। कई जगह काटा था रोमी ने उसे। वह चिल्लाती रही थी, पर कोई नहीं आया था उसे कुत्ते से बचाने। वह लौट कर जब घर आती है और रात में ही मर जाती है।[10]

हिन्दु वर्ग व्यवस्था ने पुराने समय से दलितों की शक्ति और बुद्धि को गुलाम बनाए रखा जिससे वे कभी भी ऊपर नहीं उठ सके। दलितों को सवर्णो के यहां बहुत सारा काम करना पड़ता है जिसका सशक्त चित्रण उनकी **मंजूरी** कहानी में होता है।

इस कहानी में दलितों की आर्थिक विपन्नता के साथ ही उनके स्वाभिमान का सटीक चित्रण कर लेखक ने अपने उद्धेश्य में सफलता पाई है।

❖ दलित कहानी में शिक्षा का प्रसार हुआ है –

नैमिशराय जी ने शिक्षा पर बहुत जोर दिया। उन्हें पता है कि जब तक दलित शिक्षित नहीं होगा तब तक उसमें आत्मसम्मान धार्मिक आडम्बर संबंधी विरोधी भावना सामाजिक चेतना और शोषण दमन विरोधी चेतना का प्रस्फुटन नहीं होगा।

'भीड़ में वह'नैमिशराय जी ने 'भीड़ में वह' कहानी में चित्रण किया है कि लालबाई एक वेश्या है जो मजबूरी वश शरीर बेच कर अपने (पुत्र) बाबू को पढ़ाना चाहती है और उसका प्रवेश नगर पालिका के स्कूल में कराती है वह सोते–जागते अपने बाबू को बड़ा आदमी बनाने का सपना देखती है।

जल्दी ही लालबाई की आंखे लग जाती हैं वह सपने में देखती है बाबू ने बरहवीं पास कर ली है फिर कालेज में उसका दाखिला हो जाता है। बाबू खूब पढ़ता है। कोठे पर पहले जो लोग उसे गालियां देते थे। उसका मजाक उड़ाते थे। अब उसे प्यार करने लगे है। कोठे के अन्य बच्चे भी धीरे–धीरे पढ़ने लगे हैं। कॉलेज से लौटकर बाबू उन्हें पढ़ाता है। कथा क्षेत्र में यह उनकी सकारात्मक पहल है।

बाबा साहेब डॉ. आम्बेडकर के शैक्षिक प्रेरणा के परिणाम स्वरूप दलितों में शिक्षा का प्रसार हुआ। दलित के बच्चोंने शिक्षा ग्रहण करने के लिए स्कूलों और कॉलेजों मे प्रवेश लिया लेकिन सवर्ण मानसिकता वाले शिक्षकों ने उन बच्चों को पढ़ने से रोकने की पुरी कोशिश की। फिर भी दलित बच्चे यातनांए भोगते हुए शिक्षा हांसिल कर समाज में अपनी पहचान बनाने की कोशिश कर रहे है।

'गाँव' मोहनदास नैमिशराय जी की 'गाँव' कहानी में दिखाया गया है कि सुक्सन हजामत बनाने का काम करता हुआ अपने बड़े लड़के को मेहनत करके पढ़ाता है। जिस गाँव में शिक्षा पाना बड़ी बात थी। ननकू का रिजल्ट आता है तो सुक्सन की खुशी का ठिकाना नहीं रहता। गर्मियों की छुट्टियों के बाद परिणाम घोषित हुए तो ननकू शहर से गॉव खुशी–खुशी आया। सुक्सन ने सुना तो खुशी उससे संभले न संभल रही थी।

नैमिशराय जी के कहानियों में दलित भूख से पीड़ीत है लेकिन शिक्षा प्राप्त करने के लिए सजग है जो बड़ी सजगता के साथ अपने बच्चों को शिक्षित कर रहा है।

'अधिकार चेतना' इस कहानी में बाबा साहेब की प्रतिमा स्थापित करते समय दलित और सवर्णो के बीच हुए संघर्ष के दौरान पुलिस द्वारा चलाई गई गोली से मारे गये दो दलित व प्रतिक्रिया स्वरूप दलितों द्वारा पथराव में हुई एक पुलिस वाले की हत्या की घटना से उपजे संघर्ष को दर्शाया गया है। जिसमें दलित एक ओर न केवल सवर्ण लोगो की कुंठा और घृणा का शिकार होता है। बल्कि वह पुलिस और प्रशासन की जुल्म ज्यादती व पक्षपात का भी उतना ही शिकार होता है।

लेखक ने जिस बखूबी से दलितों के साहस, चेतना और अस्मिता की रक्षा के लिए उन्हें एकजुट होते दिखा है वैसा वर्णन अन्यत्र नहीं मिलता।

अधिकारी चेतना नामक कहानी में बाबा साहेब डॉ. आम्बेडकर के संघर्ष से दलितों में उपजी चेतना और उनके प्रति अटूट सम्मान को दर्शाती है जिसको कथाकार ने दलित पत्रकार के माध्यम से विचित्र करने को सार्थक प्रयास किया है।

❖ धर्म परिवर्तन का चित्रण–

'पुरा आदमी'कहानी हिन्दु–मुस्लिम विचार पर आधारित है। हनुमान प्रसाद विद्यालय के प्रधानाचार्य हैं। मौलवी की मौत हो जाने पर झम्मन से हनुमान प्रसाद शर्मा पूछते हैं कि तुने 'मुझे बताया नहीं कि मौलवी की मौत हो गई।'

झम्मन कहता है – ''साहब बता कर क्या करता आप जाते ही नहीं।''

हनुमानप्रसाद शर्मा रहमान के घर जाते हैं। मौलवी की मृत्यु के संबंध में बातचीत करते है। मस्जिद में नए मौलवी आते है। तब मौलवीं रहमान से कहते है

''क्या खाक ठीक है! तुम आधे मुसलमान हो!''

यह सुनकर रहमान का चेहरा तमतमा उठता है मौलवी से कहता है – '' मै आधा मुसलमान ही सही, आदमी तो पुरा हूँ।''[11]

यही कहानी का अंत हो जाता है। कहने का भाव कि धर्म गुरू ही समाज में विघटन पैदा करते है। जबकि धर्म गुरूओं को समाज परिवर्तन के लिए नए-नए सूत्र तलाश करने चाहिए।

'यात्रा'एक आदिवासी लड़की के जीवन को लेकर 'यात्रा' नामक कहानी लिखी गई है। उक्त कहानी में आदिवासी लड़की के साथ ठेकेदार, चर्च का फादर बलात्कार करते है कहानीकार का कहानी लिखने का तात्पर्य है कि लड़की न घर में सुरक्षित है और न धार्मिक स्थलों में। जैसे-जैसे लोग धर्म बदलते है वैसे-वैसे ही धार्मिक पुरूष बिस्तर बदलते है।

'धर्म परिवर्तन'अरविंद मौर्य औरनीलम एक शिक्षित संपत्ति है और बाबा साहेब डॉ आम्बेडकर के विचार धारा से प्रभावित थे अरविंद मौर्य अध्यापक था और मुस्लिम धर्म अपने की बात करता है तो नीलम बौद्ध धर्म अपनाने की सलाह देती है धर्म परिवर्तन के कशमकश में भंते जी कहते है - ''बाबा साहेब ने नागपुर में 14 अक्टूबर,1956 को बौद्ध धर्म स्वीकारकिया। कितने लोगो ने उनके आहवन को चुनौति मानकर स्वीकार किया? भंते फिर बोले ''तब भी अधिकांश दलित कुछ पंथो/विचारों/उपजातियों में फंसे थे और आज भी वे इसी दलदल में फंसे हैं।''[12]

इस प्रकार हम देखते है कि **दलित धर्म परिवर्तन** के विभिन्न आयाम पर कहानीकार ने जोर दिया है लेकिन दलित का जीवन में काफी सुधार आया है वह अपनी अस्मिता को समाज के सामने प्रस्तुत करने लगा है।

निष्कर्ष -

मोहनदास नैमिशराय का पहला कहानी संग्रह '**आवाजें**' दूसरा कहानी संग्रह '**हमारा जवाब**' और तीसरा कहानी संग्रह '**दलित कहानियाँ**' है।इन सभी कहानियों में परिवर्तन की आदतें स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ती है। उक्त कहानियों में सवाल दर सवाल उभरते हैं जिनके उत्तर भी देने की कोशिश की है। समाज के साथ किसी भी प्रकार की ज्यादती उन्हें अंदर तक उद्धेलित करती हैं। वर्ण व्यवस्था जनित जातिवाद की विषमताएं उसके कारण दलितों को दुर व्यवस्थामय जीवन दलित महिलाओं के साथ अन्याय-अत्याचार और बलात्कार जैसी जघन्य घटनाएँ आरक्षण विरोधी आन्दोलन की सच्चाइयाँ और अनेक प्रकार की विसंगतियाँ जहां कलम से बच नही पाई वहीं पर दलितों के जीवन में घर कर गई अनेक बुराईया समेंत उनका समग्र जीवन भी चित्रण से छुट नहीं सका है।

भारतीय समाज के अनंत काल से वर्ण व्यवस्था के अधीन समाज रहा है। युग बदलने के साथ-साथ संघर्ष के स्वर भी मुखर होते रहे। इसी कड़ी में मोहनदास नैमिशराय अपनी कहानियों के द्वारा साहित्यिक क्षेत्र अपना मार्ग प्रशस्त करते हैं। मुख्य रूप से दलित अस्मिता को साथ लेकर कहानियों के विभिन्न पात्रों के जीवंत इतिहास को आगे बढ़ाया है। इनकी कहानियाँ दलित जीवन के आस-पास की होने वाली घटनाओं एवं दुर्घटनाओं को लेकर लिखी गयी कथाकार इस बात को बहुत ही सूक्ष्म रूप से चित्रित करता है कि दलितों का अपना गाँव और घर कैसा होगा। वह पूजा-पाठ के ढोंग-ढकोसलों से अलग हटकर दलित को एक विवेकपूर्ण जीवन जीने कोकहता है जिसकी चेतना बौद्ध धर्म की सामूहिक घर-वापसी में ही पाई जा सकती है।

सभी कहानियाँ में 'गांव'और 'शहर' का सफल चित्रण है। कहानीकार स्वयं नही बोलता बल्कि कहानियाँ बोलती हैं। परिवेश कुछ कहता है इस व्यवस्था में दलितों को मिले बेइंतहा दर्द के लिए तथाकथित सभ्य समाज से मिले अपनी बदहाली के कारणों का बराबर उत्तर मांगती हैं। इनमें घटनाओं और संवादों का इतना सहज और मार्मिक चित्रण है मानों हम कोई फिल्म देख रहे हों। इनमें न केवल दलित दर्द मुखरित हो उठा है बल्कि ये उन्हे दरिद्रता से उबरने की परिवर्तनगामी चेतना की सहज प्रेरणा देती कहानियाँ है। जिसमें लेखक ने कहीं भी अनावश्यक उत्तेजना का चित्रण नही किया है। अतः इनमें दलित जीवन अपनी समग्रता के साथ चित्रित हुआ है।

दलित वह है जो मानवीय अधिकारों से वंचित हो तथा सामाजिक क्षेत्र में हाशिए पर हो जिसमें अनुसूचित जाति बौद्ध कामगार, भूमिहीन मजदूर, गरीब किसान, खानाबदोश जाति, आदिवासी जाति और नारी समाज आता है। जिन पर प्राचीन काल से ही सवर्ण समाज ने अन्याय, शोषण,अत्याचार किया है, ऐसे दलित समाज का चित्रण मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में हुआ है।

संदर्भ सूची –

1 **'दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र'**– ओमप्रकाश बाल्मीकी, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड 7/31, अंसारी मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.क्र.–109।

2 **'आवाजें'**– मोहनदास नैमिशराय, श्री नटराज प्रकाशन, ए–507/12करतार नगर, बाबा श्यामगिरी मार्ग, साउथ गामड़ी एक्सटेशन, दिल्ली, पृ.क्र.–31,68।

3 वहीं, पृ.क्र.–31–68।

4 **'दलित कहानियाँ'**– मोहनदास नैमिशराय, नीलकंठ प्रकाशन, 4760–61 (द्वितीय तल) 23,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.क्र.–47–51।

5 **'आवाजें'**– मोहनदास नैमिशराय, श्री नटराज प्रकाशन, ए–507/12करतार नगर, बाबा श्यामगिरी मार्ग, साउथ गामड़ी एक्सटेशन, दिल्ली, पृ.क्र.–123।

6 **'समकालीन समीक्षा के सोपान'**– डॉ.शारदा प्रसाद, पंकज बुक्स प्रकाशन, 109–ए पटपड़गंज दिल्ली, पृ.क्र.–72।

7 **'मोहनदास नैमिशराय का साहित्य मूल्यांकन',** रूपचंद गौतम, श्री नटराज प्रकाशन, ए–507/12करतार नगर, बाबा श्यामगिरी मार्ग, साउथ गामड़ी एक्सटेशन, दिल्ली, पृ.क्र. –118।

8 **'आवाजें'**–मोहनदास नैमिशराय, श्री नटराज प्रकाशन, ए–507/12करतार नगर, बाबा श्यामगिरी मार्ग, साउथ गामड़ी एक्सटेशन, दिल्ली, पृ.क्र.–101।

9 वहीं, पृ.क्र.–124।

10 **'हमारा जवाब'**– मोहनदास नैमिशराय श्री नटराज प्रकाशन, ए–507/12करतार नगर, बाबा श्यामगिरी मार्ग, साउथ गामड़ी एक्सटेशन, दिल्ली, पृ.क्र.–पुस्तक से।

11 **'दलित कहानियाँ'**– मोहनदास नैमिशराय, नीलकंठ प्रकाशन, 4760–61 (द्वितीय तल) 23,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.क्र.–63।

12 वहीं, पृ.क्र.–127।

LBP PUBLICATION